स्वच्छ आदत से स्वच्छ भारत: भारत के स्वच्छता आंदोलन में बुनियादी ढांचे से व्यवहार परिवर्तन तक

UPSC प्रासंगिकता

IAS-PCS Institute

- **GS-2:** शासन, सामुदायिक भागीदारी, शहरी स्थानीय निकाय
- **GS-3:** पर्यावरण संरक्षण, अपशिष्ट प्रबंधन, सतत विकास
- **निबंध:** व्यवहार परिवर्तन और राष्ट्र निर्माण; नागरिक जिम्मेदारी और विकास

खबरों में क्यों? 9 फरवरी 2026 को, "स्वच्छ आदत से स्वच्छ भारत" पर नए सिरे से जोर दिया गया, जो स्वच्छ भारत मिशन के तहत स्वच्छता के व्यवहार संबंधी आयाम को रेखांकित करता है। यह पहल इस बात पर जोर देती है कि पिछले दशक में बुनियादी ढांचे (infrastructure) का काफी विस्तार हुआ है, लेकिन अब लाभ को बनाए रखना दैनिक आदतों, सामुदायिक स्वामित्व और नागरिक जिम्मेदारी पर निर्भर करता है।

पृष्ठभूमि: मिशन मोड से जन आंदोलन तक 2014 में शुरू किए गए स्वच्छ भारत मिशन (SBM) ने स्वच्छता को एक मामूली प्रशासनिक मुद्दे से राष्ट्रीय विकास प्राथमिकता में बदल दिया। इसने निम्नलिखित पर ध्यान केंद्रित किया:

Result Mitra
@resultmitra www.resultmitra.com

- शौचालय तक पहुंच का विस्तार करना
- खुले में शौच को समाप्त करना
- ठोस और तरल अपशिष्ट प्रबंधन को मजबूत करना
- नागरिक भागीदारी को प्रोत्साहित करना

मिशन ने स्वच्छता को एक निजी घरेलू चिंता के बजाय एक सामूहिक नागरिक कर्तव्य के रूप में फिर से परिभाषित किया। हालांकि, केवल बुनियादी ढांचा निरंतर स्वच्छता की गारंटी नहीं दे सकता है। वर्तमान चरण 'व्यवहार की निरंतरता' पर जोर देता है — स्वच्छता को एक अभियान से संस्कृति में बदलना।

बदलाव: बुनियादी ढांचा निर्माण से व्यवहारिक स्थिरता तक "स्वच्छ आदत से स्वच्छ भारत" का नारा एक महत्वपूर्ण नीतिगत विकास का प्रतिनिधित्व करता है। जबकि शौचालय, अपशिष्ट संग्रह प्रणाली और शहरी बुनियादी ढांचा परिवर्तन को सक्षम बनाते हैं, आदतें इसे बनाए रखती हैं। दैनिक अभ्यास जैसे:

- एकल-उपयोग प्लास्टिक (single-use plastic) को मना करना
- कूड़ा फैलाने और थूकने से बचना
- कचरे का पृथक्करण (गीले के लिए हरा, सूखे के लिए नीला)
- हाथों की स्वच्छता बनाए रखना
- कम करना–पुन: उपयोग–पुनर्चक्रण (Reduce–Reuse–Recycle) का अभ्यास करना ये दीर्घकालिक स्वच्छता सफलता की रीढ़ बनते हैं। यह व्यवहारिक दृष्टिकोण 'नज थ्योरी' (nudge theory) और सामाजिक मानक निर्माण के सिद्धांतों के अनुरूप है, जहाँ बार-बार किए गए कार्य धीरे-धीरे सामुदायिक मानकों को नया आकार देते हैं।

स्थानीय नवाचार: स्थायी परिवर्तन लाने वाले दैनिक कार्य

1. दिल्ली में 'वेस्ट टू आर्ट' (कचरे से कला) दिल्ली में एमसीडी (MCD) दक्षिण क्षेत्रीय कार्यालय में, फेंके गए पाइपों और अनुपयोगी कूड़ेदान के पहियों को सार्वजनिक कलाकृतियों के रूप में पुन: उपयोग किया गया, जिनका अनावरण गणतंत्र दिवस 2026 पर किया गया। यह पहल दर्शाती है कि कैसे कचरे को एक संसाधन के रूप में पुनर्कल्पित किया जा सकता है, जो नगर निगम स्तर पर चक्रीय अर्थव्यवस्था (circular economy) के सिद्धांतों को पुख्ता करता है।

2. उत्तर प्रदेश में एकीकृत स्वच्छता प्रदर्शन उत्तर प्रदेश की एक झांकी ने एकीकृत अपशिष्ट प्रणालियों का प्रदर्शन किया — घर-घर कचरा संग्रह, स्रोत पर पृथक्करण, 'स्वच्छ सारथी क्लब', प्लास्टिक मुक्त अभियान, 1533 हेल्पलाइन और सार्वजनिक शौचालयों का रखरखाव। इसने चित्रित किया कि कैसे संस्थागत समर्थन और नागरिक जुड़ाव के माध्यम से स्वच्छता प्रथाएं दिनचर्या बन जाती हैं।

3. बेंगलुरु और चेन्नई में शहरी अपशिष्ट समाधान बेंगलुरु में, नागरिकों ने सोफे जैसे भारी कचरे (bulky waste) की समस्या से निपटने के लिए सामुदायिक संचालित निपटान प्रणालियों के माध्यम से सहयोग किया। चेन्नई में, लैंडफिल कचरा पुनर्चक्रण टीमों ने डंपिंग ग्राउंड के बोझ को कम करने के लिए प्रक्रिया-उन्मुख दृष्टिकोण अपनाया। ये प्रयास शहरी स्वच्छता शासन में सिस्टम-स्तरीय सोच के महत्व को उजागर करते हैं।

4. उत्तर प्रदेश में तमसा नदी का पुनरुद्धार आज़मगढ़ में, निवासियों ने सामूहिक रूप से तमसा नदी को पुनर्जीवित किया, जो अयोध्या से निकलती है और गंगा में विलीन हो जाती है। सामुदायिक प्रयासों में शामिल थे:

- नदी तल की सफाई
- जमा हुए कचरे को हटाना
- किनारों पर पेड़ लगाना यह पुनरुद्धार दर्शाता है कि पारिस्थितिक बहाली (ecological restoration) तब सफल होती है जब वह सामयिक हस्तक्षेप के बजाय निरंतर स्थानीय स्वामित्व द्वारा संचालित होती है।

5. जम्मू और कश्मीर में नागरिक अभिव्यक्ति जम्मू-कश्मीर के बहू प्लाजा में, "गणतंत्र की आवाज़ – स्वच्छता के साथ" ने नागरिक जिम्मेदारी को मजबूत करने के लिए कविता और संगीत का उपयोग किया। सांस्कृतिक जुड़ाव ने सार्वजनिक भागीदारी को गहरा किया, जिससे पता चलता है कि स्वच्छता आंदोलन तब मजबूती प्राप्त करते हैं जब वे सामाजिक पहचान और देशभक्ति में समाहित होते हैं।

6. उत्तर पूर्व भारत में युवाओं के नेतृत्व वाले प्रयास अरुणाचल प्रदेश में, युवा स्वयंसेवकों ने ईटानगर और नाहरलागुन जैसे शहरों में निरंतर सफाई अभियान शुरू किया, जिससे 11 लाख किलोग्राम से अधिक कचरा हटाया गया। इसी तरह, नगांव के निवासियों ने पड़ोस की सफाई की पहल का आयोजन किया, जो स्थानीय स्थानों के प्रति भावनात्मक लगाव को दर्शाता है। ये उदाहरण बताते हैं कि एकमुश्त अभियानों के बजाय निरंतर व्यवहारिक जुड़ाव ही स्थायी स्वच्छता परिणाम उत्पन्न करता है।

शासन आयाम: सार्वजनिक नीति के रूप में व्यवहार स्वच्छता आंदोलन अब तीन स्तंभों पर टिका है:

1. **संस्थागत प्रणालियाँ:** घर-घर संग्रह, हेल्पलाइन, अपशिष्ट प्रसंस्करण इकाइयाँ।
2. **सामुदायिक स्वामित्व:** निवासी कल्याण समूह (RWA), युवा स्वयंसेवक, सांस्कृतिक मंच।
3. **व्यवहार मानक निर्माण:** पृथक्करण और स्वच्छता को सामाजिक रूप से अपेक्षित व्यवहार बनाना। यह संक्रमण राज्य-संचालित कार्यान्वयन से नागरिक-संचालित स्थिरता की ओर बदलाव का प्रतीक है।

व्यवहारिक लाभ बनाए रखने में चुनौतियाँ प्रगति के बावजूद, कई मुद्दे बने हुए हैं:

IAS-PCS Institute
Result Mitra
रिजल्ट का साथी
@resultmitra www.resultmitra.com 9235313184, 9235440806

- अभियान चक्र के बाद पुरानी आदतों में वापस लौटना
- शहरी कचरे की जटिलता (ई-कचरा, भारी कचरा)
- असमान नगर निगम क्षमताएं
- उपभोग पैटर्न में प्लास्टिक पर निर्भरता
- समय के साथ व्यवहारिक थकान (behavioural fatigue) निरंतर जुड़ाव और प्रोत्साहन के बिना, बुनियादी ढांचे के कम उपयोग का जोखिम बना रहता है।

आगे की राह: 'स्वच्छ आदत' को संस्थागत बनाना

- व्यवहारिक शिक्षा को स्कूल के पाठ्यक्रम में एकीकृत करना।
- वित्तीय और तकनीकी क्षमता के साथ शहरी स्थानीय निकायों को मजबूत करना।
- चक्रीय अर्थव्यवस्था मॉडल और 'कचरे से मूल्य' (waste-to-value) उद्यमों को बढ़ावा देना।
- जवाबदेही के लिए डिजिटल प्लेटफॉर्म और समुदाय-आधारित निगरानी का उपयोग करना।
- युवा नेतृत्व और नागरिक सांस्कृतिक पहलों को प्रोत्साहित करना। दैनिक जीवन के भीतर स्वच्छता की आदतों को शामिल करना नीतिगत चक्रों से परे निरंतरता सुनिश्चित करता है।

निष्कर्ष:

जब आदत मिशन को आगे ले जाती है स्वच्छ भारत मिशन का विकास एक गहरे शासन सबक को दर्शाता है: बुनियादी ढांचा परिवर्तन की शुरुआत करता है, लेकिन व्यवहार इसे बनाए रखता है। आज़मगढ़ में नदी पुनरुद्धार से लेकर उत्तर पूर्व में युवाओं के नेतृत्व वाली सफाई तक, संदेश स्पष्ट है — स्थायी परिवर्तन तब उभरता है जब जिम्मेदारी दिनचर्या बन जाती है। "स्वच्छ आदत से स्वच्छ भारत" संकेत देता है कि भारत की स्वच्छता यात्रा अब अभियान-संचालित नहीं बल्कि संस्कृति-संचालित है। जब स्वच्छता कभी-कभार किए जाने वाले कार्य के बजाय एक दैनिक मानक बन जाती है, तो प्रगति आत्मनिर्भर हो जाती है — जो आने वाली पीढ़ियों के लिए सार्वजनिक स्वास्थ्य, पर्यावरणीय लचीलापन और नागरिक गरिमा को मजबूत करती है।

मुख्य परीक्षा प्रश्न

प्रश्न: "केवल अवसंरचना निर्माण से सतत स्वच्छता परिणाम सुनिश्चित नहीं किए जा सकते; व्यवहार परिवर्तन भी उतना ही महत्वपूर्ण है।" हाल ही में Swachh Bharat Mission के अंतर्गत 'स्वच्छ आदत से स्वच्छ भारत' पर दिए गए बल के संदर्भ में, भारत की स्वच्छता उपलब्धियों को बनाए रखने में नागरिक भागीदारी और आदत निर्माण की भूमिका का समालोचनात्मक परीक्षण कीजिए।(15 अंक, 250 शब्द)